Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जनजातीय समुदाय के विकास में संस्थागत बैंकों की भूमिका (अलीराजपुर जिले के जोबट विकासखण्ड के संदर्भ में)

डॉ. एच. डुडवे*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – विकास के प्रारम्भ से ही कृषि लोगों की आजीविका का प्रमुख साधान रही है। आज भी कृषि विश्व की अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय तथा आय का सबसे बड़ा साधन है। विकासशील देशों में प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि आय का सबसे बड़ा स्त्रोत, रोजगार एवं जीवनयापन का प्रमुख साधान, औद्योगिक विकास एवं विदेशी व्यापार का आधार है। कृषि इन देशों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि विकास के सोपान पर चढ़कर ही विश्व के विकसित राष्ट्र आज आर्थिक विकास के शिखर पर पहुंच सके हैं। इग्लैंड, जर्मनी, रूस तथा जापान आदि देशों के विकास में कृषि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा तीव्र औद्योगीकरण के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान किया। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक के विचारकों ने कृषि विकास पर पर्याप्त बल दिया है। आर्थिक विचारों के इतिहास पर यदि ध्यान दिया जाए तो स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में कृषि की अत्यधिक महत्व प्रदान किया जाता था। भूमि और कृषि प्राचीन आर्य संस्कृति के आधार स्तम्भ है। भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को माता के पवित्र सम्बन्ध से सम्बन्धित किया गया है। यहां कृषि फर्म को प्रथम, वाणिज्य को द्वितीय सेवा कार्य को तृतीय स्थान प्रदान किया गया है। प्राचीन यूनानी विचारकों कृषि व्यवसाय को विशेष महत्व प्रदान किया था। प्राकृतिक अवस्था सम्बन्धी खोज के दौरान प्रकृतिवादियों ने ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिनके कारण कृषि की महत्ता पर्याप्त बढ़ गई। उनका विश्वास था कि कृषि ही समाज की सम्पत्ति उत्पन्न करने वाली तथा उत्पादक है और इसके अतिरिक्त समस्त व्यवसाय वाणिज्य, व्यापार तथा यातायात आदि अनुत्पादक है ।

साहित्य समीक्षा

कुसुमाकर, अरूणा (मार्च 2015), 'आधुनिक तकनीकी का ग्रामीण कृषि विकास पर प्रभाव' ग्रामीण कृषि विकास में आधुनिक तकनीकी से उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है ग्रामीण कृषकों को कृषि वित्त जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संस्थागत बैंकों के माध्यम से क्षेत्र के किसानों को कम दर पर आसानी से ऋण उपलब्ध हो जाता है तो उत्पादन एवं उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि होगी ओर देश एवं राज्य के आर्थिक विकास में सहयोग प्राप्त होगा।[1]

साह, दिपक (2008), 'भारत में सहकारी क्रेडिट संस्थानों के मामले में वित्तक्षेत्र के सुधार' ग्रामीण भारत में सहकारिता के माध्यम से क्रेडिट प्रवाह और उनकी स्थिरता, व्यवहारिकता और परिचालन क्षमता वित्त क्षेत्र सुधारों के युग में विभिन्न नीति निर्माताओं के ध्यान का मुख्य केन्द्र बन गया है।[2]

पटेल, अमृत (2004), 'सहकारी बैंकों की उपलब्धियों एवं चुनौतियाँ' स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की अवधि में ग्रामीण सहकारी संस्थाओं ने निश्चत रूप से कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और इसे निर्यात बनाने में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सहकारी संस्थाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में अपने सुचारू संचालन में अनेक समस्यओं का सामना करना पड़ा।[3]

शोध का उद्देश्य– कृषकों का आर्थिक स्वरूप किस प्रकार का है तथा उनकी समस्या अलग-अलग स्थान और अलग-अलग परिपेक्ष में किस प्रकार की अलग-अलग है इसकी समीक्षा करना आवश्यक है जिससे शासकीय योजनाओं की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सके। जिससे समस्या के समाधान खोजने के प्रयास किये जा सके। निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं। जो इस प्रकार है –

1. जनजातीय क्षेत्रों में बैकिंग सेवाओं की उपलब्धता और उनकी प्रभावशीलता को समझना।
2. शासन और बैंकों द्वारा जनजातीय समुदाय के लिए चलाई जा रही वित्तीय योजनाओं और नीतियों का अध्ययन करना।
3. जनजातीय समुदाय की आर्थिक सशक्तिकरण में बैंकिंग प्रणाली की भूमिका का मूल्यांकन करना।

अध्ययन की परिकल्पना – सामाजिक घटनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन में परिकल्पनाओं का निर्माण, उनका प्रयोग, उनकी उपयोगिता, शोध का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष होता है। परिकल्पनाओं को अनेक बार प्राक्कल्पना, उपकल्पना, पूर्व-कल्पना इत्यादि नामों से पुकारा जाता है।[4] कृषि विकास में संस्थागत बैंकों की भूमिका के अध्ययन में निम्नलिखित उपकल्पनाओं की रचना कि गई है जो इस प्रकार है :

1. जनजातीय समुदाय के लोग बैंकिग सेवाओं का पूरा लाभ नहीं उठा पा रहे है क्योंकि जागरूकता और पहुंच की कमी है।
2. संस्थागत बैकिंग सेवाओं का जनजातीय समुदाय के आर्थिक विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन का क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान क्षेत्र के रूप में अलीराजपुर जिले के जोबट विकाखण्ड का चयन किया गया है। जिसमें अलीराजपुर जिले में संस्थागत बैंकों द्वारा कृषकों को लाभान्वित किया गया है। उन हितग्राहियों में से दैव निदर्शन पद्धित द्वारा 50 हितग्राहियों का चयन कर उनका अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व – भारत का विकास सिर्फ वित्त संस्थानों की मदद से किया जा सकता है लेकिन इसके लिए ग्रामीणों को

बैंकों से जोड़ने के अलावा उन्हें वित्त रूप से साक्षर बनाना भी जरूरी है। कृषि ऋण में प्रभावशाली वृद्धि होने के बावजूद अभी भी कई ऐसी चुनौतियां है जिनसे निपटने की जरूरत है। इसके अलावा कुछ अन्य कारण भी है, जैसे तुरन्त ऋण का न मिलना, किसानों के पास उपयुक्त सुरक्षा का अभाव, आगत और निर्गत की अवधि अधिक होना, कृषि व्यवसाय का मौसमी होना, ऋण का उचित अनुमान न लगा पाना, जिससे सरकार एवं अध्ययन क्षेत्रों में कृषि विकास में सहायक सिद्ध होगा, अध्ययन क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास हेतु कृषि विकास कार्यक्रम बनाने मे मार्गदर्शक होगा।

संमकों का संकलन – अनुसंधान की विश्वसनीय उस शोध में संकलित ऑकड़ों पर निर्भर करती है यदि ऑकड़ों का संकलन सही तरीके से किया गया है तो शोध कार्यो में गुणवत्ता आ जाती है और उसके परिणामों को बेहतर एवं विश्वसनीय तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। समंको संकलन एक महत्वपूर्ण चरण होता है। शोध कार्य की सम्पुर्ण सफलता शुद्धतम रूप से एकत्र किए गए ऑकड़ों पर ही निर्भर करता है। अध्ययन के दौरान समंक संकलन प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है–

प्राथमिक समंक – प्राथमिक समंक वे मौलिक सुचनाऐं या तथ्य होते हैं जो कि एक शोधकर्त्ता वास्तविक अध्ययन स्थल में जाकर विषय से सम्बन्धित व्यक्तियों से साक्षात्कार करके अथवा अनुसूची और प्रश्नावली की सहायता से एकत्रित करता है अथवा प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा प्राप्त करता है।

आंकडे का विश्लेषण – जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा से सन्दर्भित प्रमुख बाधाओं के रूप में अवांछित पर्यावरण जिनमें शैक्षिक अनियमितताएँ, अनुपयोगी पाठ्यक्रम, साधनों की कमी एवं जनजातीय क्षेत्रों से जुड़ी अनेक सामाजिक एवं आर्थिक प्रतिकूलताएँ जिम्मेदार है।

अध्ययन क्षेत्र में आदिवासियों केशैक्षणिक स्थिति के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उन्हें तालिका में दर्शाया गया है –

तालिका क्र. 01: शैक्षणिक स्थिति सम्बंधी जानकारी

क्र.	शैक्षणिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	साक्षर	4	8.00
2.	प्राथमिक+ माध्यमिक	25	50.00
3.	हाई स्कूल+ हायर स्कूल	15	30.00
4.	उच्च शिक्षा	6	12.00

योग 50 100.0

स्त्रोंत:–सर्वेक्षण के आधार पर

सर्वेक्षित कृषक परिवारों के शैक्षणिक स्थिति से सम्बन्धी जानकारी में 8.00 प्रतिशत उत्तरदाता साक्षर है, 50.00 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक + माध्यमिक है, 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल + हायर स्कूल पास है, 12.0 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च शिक्षा पास है, अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक प्राथमिक+माध्यमिक उत्तरदाताओं के ऑकड़े अधिक है।

व्यवसाय के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उन्हें तालिका में दर्शाया गया है–

तलिका क्र. 02: कृषक परिवारों का मुख्य व्यवसाय

क्र.	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कृषि और मजदूरी	35	70.00
2.	कृषि और पशुपालन	13	26.00
3.	कृषि और नौकरी	02	4.00
	योग	**50**	**100**

स्त्रोंत:–सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वेक्षित कृषक परिवारों के व्यावसायिक संरचना से सम्बन्धी जानकारी में 70.00 प्रतिशत परिवार कृषि और मजदूरी कार्य करते हैं, 26.00 प्रतिशत परिवार कृषि और पशुपालन दोनों कार्य करते हैं, 4.00 प्रतिशत परिवार कृषि और नौकरी दोनों कार्य करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में कृषक परिवारों की कुल वार्षिक आय के सम्बन्ध में जो ऑकडे प्राप्त हुए हैं उन्हें तालिकामें दर्शाया गया है –

तालिका क्र. 03: कृषकों की कुल वार्षिक आय सम्बन्धी जानकारी

क्र.	कुल वार्षिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	50,000 से कम	8	16.00
2.	50,001 से 80,000 तक	26	52.00
3.	80,001 से 1,00,000 तक	12	24.00
4.	1,00,001 से अधिक	4	8.00
	योग	**50**	**100.0**

स्त्रोंत:–सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका क्रमांक के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में वार्षिक आय सम्बन्धी जानकारी में 50,000 से कम 16.00 प्रतिशत है, 50,001 से 80,000 तक में 52.00 प्रतिशत है, 80,001 से 1,00,000 तक में 24.00 प्रतिशत है, 1,00,001 से अधिक में 8.00 प्रतिशत है।

अध्ययन क्षेत्र में फसलों के उत्पादन सम्बन्धी जानकारी में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उन्हें तालिका में दर्शाया गया है –

तालिका क्र. 04: फसलों के उत्पादन सम्बन्धी जानकारी

क्र.	फसलों का उत्पादन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	खाद्यान्न फसलें	11	22.00
2.	व्यापारिक फसलें	5	10.00
3.	उक्त दोनों फसलें	34	68.00
	योग	**50**	**100.0**

स्त्रोंत:–सर्वेक्षण के आधार पर

सर्वेक्षित परिवारों में 22.00 प्रतिशत कृषक खाद्यान्न फसलों का उत्पादन करते हैं, 10.00 प्रतिशत परिवार व्यापारिक फसलों का उत्पादन करते हैं, 68.0 प्रतिशत परिवार खाद्यान्न एवं व्यापारिक दोनों फसलों का उत्पादन करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य हेतु संस्थागत वित्त की आवश्यकता सम्बन्धी जानकारी में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उन्हें तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका क्र. 05: कृषि कार्य हेतु संस्थागत वित्त की आवश्यकता सम्बन्धी जानकारी

क्र.	संस्थागत वित्त की आवश्यकता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हॉ	42	84.00
2.	नहीं	8	16.00
	योग	**50**	**100.0**

स्त्रोंत:–सर्वेक्षण के आधार पर

कृषि कार्य हेतु संस्थागत वित्त की आवश्यकता सम्बन्धी जानकारी में सर्वेक्षित परिवारों में 84.00 प्रतिशत कृषक परिवारों को कृषि कार्य हेतु वित्त की आवश्यकता होती है, 16.00 प्रतिशत कृषक परिवार कृषि वित्त की आवश्यकता नहीं होती है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषकों का संस्थागत ऋण लेने से परिवार की वार्षिक

आय में वृद्धि सम्बन्धी की जानकारी के सम्बन्ध में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उन्हें तालिका में दर्शाया गया है

तालिका क्र. 06: संस्थागत ऋण से कृषकों की आय में वृद्धि

क्र.	संस्थागत ऋण से कृषकों की आय में वृद्धि	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	44	88.00
2.	नहीं	6	12.00
	योग	**50**	**100**

स्त्रोंत:-सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से विश्लेषण से ज्ञात होता है कृषकों द्वारा संस्थागत ऋण लेने से परिवार की वार्षिक आय में वृद्धि सम्बन्धी जानकारी में सर्वेक्षित परिवारों में 88.00 प्रतिशत कृषक परिवारों आय में वृद्धि होती है, 12.00 प्रतिशत कृषक परिवारों की आय में वृद्धि नहीं होती है।

अध्ययन क्षेत्र में वित्त प्राप्त करने के संस्थागत स्त्रोत सम्बन्धी जानकारी में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उन्हें तालिका में दर्शाया गया है -

तालिका क्र. 07: वित्त प्राप्त करने के संस्थागत स्त्रोत सम्बन्धी जानकारी

क्र.	संस्थागत स्त्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	भारतीय स्टेट बैंक	16	32.00
2.	नर्मदा झाबुआ ग्रामीण बैंक	8	16.00
3.	सहकारी बैंक	22	44.00
4.	बैंक ऑफ इण्डिया	4	8.00
	योग	**50**	**100.0**

स्त्रोंत:-सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वित्त प्राप्त करने के संस्थागत स्त्रोत सम्बन्धी जानकारी में 32.00 प्रतिशत कृषक परिवारों ने भारतीय स्टेट बैंक से वित्त प्राप्त किया, 16.00 प्रतिशत कृषक परिवारों ने नर्मदा झाबुआ ग्रामीण बैंकसे वित्त प्राप्त किया, 44.00 प्रतिशत कृषक परिवारों ने सहकारी बैंक से वित्त प्राप्त किया, 8.00 प्रतिशत कृषक परिवारों ने बैंक ऑफ इण्डिया से वित्त प्राप्त किया।

समस्या और सुझाव:

1. जनजातीय समुदाय में कृषक आज भी कीटनाशक का छिड़काव परम्परागत साधनों से करते हैं, जिससे समय एवं धन का अधिक लगता है। अत: नवीन साधनों के उपयोग से समय ओर धन दोनों ही बचेगा ही साथ ही कीटनाषक का अच्छा उपयोग भी हो सकेगा।
2. कृषकों के आर्थिक विकास की एक बड़ी बाधा यह भी है कि वे अपनी उपज को भण्डारण की सुविधाएवं परिवहन के साधनों के अभाव में गाँव के आसपास खुले बाजार में साहूकारों या महाजनों को कम कीमत पर बेच देते हैं। उन्हें अपेक्षित लाभों से वंचित रहना पड़ता है। अत: इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम यह हो सकता है कि जब किसानों को अपनी उपज बेचने का समय आए तो प्रत्येक गाँव में सरकार अपना प्रतिनिधि भेजकर उनकी उपज को वाजिब या न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदें।
3. जनजातीय समुदाय में कृषकों की आय उतनी नहीं होती है, उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए साहूकारों एवं महाजनों से अधिक ब्याज दर पर ऋण लेना पड़ता है। इस कारण से उनका लंबे समय तक शोषण होता रहता हैं। उनकी सहुलियत के अनुसार निम्न ब्याज दर पर सरकारी संस्थाओं द्वारा ऋण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे उनकों शोषण से बचाया जा सकता है।
4. शासन को भूमि सुधार कार्यक्रम को और अधिक कठोरता से लागु किया जाना चाहिए। ताकिबहुफसलीय एवं फसल चक्रण को अनिवार्य रूप से अपनाया जाना चाहिए। जिससे कृषकों की आमदनी में वृद्धि हो सके।
5. जनजातीय समुदाय कृषकों को कृषि में लगने वाली बीमारीयों को दूर करने के लिए आवश्यक कीटनाशकों के संबंध में व्यापक जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्ष - कृषकों के विकास हेतु नीतियों का निर्माण करे तो निश्चित रूप से कृषि को बढ़ावा मिलगा और संस्थागत बैंक जनजतीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण और समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वित्तसमावेशन की दिशा में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है ताकि यह जनजातीय समुदाय आत्मनिर्भर बन सके और देश की मुख्यधारा में प्रभावी रूप से भाग ले सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कुसुमाकर, अरूणा (मार्च 2015) 'आधुनिक तकनीकी का ग्रामीण कृषि विकास पर प्रभाव एक अध्ययन' रिसर्च रिवल्युशन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोसियल साइन्स एण्ड मेनजमेन्ट वाल्युम 3 पृ. 57-59
2. साह, दिपक (2008) 'भारत में सहकारी क्रेडिट संस्थानों के मामले में वित्तीय क्षेत्र के सुधार'कुरूक्षेत्र, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. पटेल, अमृत (2004) 'सहकारी बैंकों की उपलब्धियों एवं चुनौतियाँ' योजना, नई दिल्ली।
4. त्रिवेदी आर.एन. एवं शुक्ला डी.पी. (2009), 'रिसर्च मैथ्डोलॉजी' कॉलेज बुक डिपो, 83 तिरपोलिया बाजार, जयपुर पृ 178.
5. जेगी, अजीत (1988) 'आदिवासी-अनुसूचित जाति कल्याण कार्यक्रम की समीक्षा के लिए गठित समिति का प्रतिवेदन' मध्यप्रदेश शासन सामान्य प्रकाशन विभाग, भोपाल पृ. 51-58.
6. नागर विष्णुदत्त एवं मेहता वल्लभदास, (1988) 'भारतीय आर्थिक समस्याएँ और नीतियाँ' प्रकाशक मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ. 105-112.
7. Fabos, Julies (1988) "Land use planning :from Gable to Local Challenge ,Chapmen and Hall, 29,West 35 Street, Publication - New York and London PP. 19-23.
8. शर्मा, ब्रह्मदेव (1986) 'आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन' प्रकाशक, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल पृ. 74-76.

****